प्रकृतिम्=दिव्य स्वरूप में; **स्वाम्**=अपने; **अधिष्ठाय**=स्थित हुआ; **संभवामि**=मैं अवतीर्ण होता हूँ; **आत्ममायया**=अपनी अन्तरंगा शक्ति से।

अनुवाद

मैं अजन्मा, सब प्राणियों का ईश्वर और सच्चिदानन्दमय अविनाशी स्वरूप होते हुए भी युग-युग में अपने आद्य चिन्मय रूप में अवतरण करता हूँ।।६।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने अपने विलक्षण आविर्भाव के वैशिष्ट्य का वर्णन स्वयं श्रीमुख से किया है—साधारण मनुष्य प्रतीत होते हुए भी अपने अनेक-अनेक पूर्व 'जन्मों' की उन्हें पूर्ण स्मृति है, जबकि साधारण मनुष्य को कुछ ही घण्टे पूर्व सम्पादित कार्य तक का स्मरण नहीं रहता। यदि किसी से पूछा जाय कि एक दिन पहले ठीक उसी समय उसने क्या किया था, तो साधारण मनुष्य के लिए इसका तत्काल उत्तर देना कठिन होगा। एक दिन पूर्व उसी समय किए हुए कर्म का स्मरण करने के लिए उसे अपनी बुद्धि का आलोडन करना होगा। इतने दुर्बल होने पर भी बहुधा मनुष्य अपने को ईश्वर अथवा श्रीकृष्ण घोषित करने का दुःसाहस कर बैठते हैं। इन निरर्थक दावों से भ्रान्त नहीं होना चाहिए। श्रीभगवान् अपनी प्रकृति अथवा रूप का आगे वर्णन करते हैं। प्रकृति का अर्थ 'स्वभाव' और 'स्वरूप' होता है। श्रीभगवान् का कथन है कि वे स्वयं अपनी देह में प्रकट होते हैं, साधारण जीवात्मा के समान देहान्तर नहीं करते। बद्धजीव को वर्तमान जन्म में एक प्रकार की देह प्राप्त होती है, तो पुनर्जन्म में कोई और। प्राकृत-जगत् में जीवात्मा की योनि निश्चित नहीं है, उसका देहान्तर होता रहता है, श्रीभगवान् ऐसा नहीं करते। वे जब भी प्रकट होते हैं, अपनी अन्तरंगा शक्ति के द्वारा उसी आद्य विग्रह में प्रकट होते हैं। भाव यह है कि श्रीकृष्ण इस जगत् में अपने उसी आद्य एवं शाश्वत् वेणुधारी द्विभुज रूप में प्रकट होते हैं, जो इस प्राकृत-जगत् के विकारों से सर्वथा मुक्त है। तथापि, उन सच्चिदानन्दमय परमेश्वर का आविर्भाव साधारण प्राणी के जन्म के समान भासता है। श्रीकृष्ण बाल्यावस्था से कौमार तथा कौमार से यौवन में तो प्रवेश करते हैं, पर यह विस्मयास्पद होते हुए भी नितान्त सत्य है कि उनकी वय यौवन से आगे कभी नहीं बढ़ती। कुरुक्षेत्र युद्ध के समय वे पितामह बन चुके थे; अर्थात् लौकिक गणना के अनुसार उनकी आयु का पर्याप्त व्यय हो चुका था, फिर भी वे बीस-पच्चीस वर्षीय नवयुवक जैसे लगते थे। हमें कभी किसी ऐसे चित्र की प्राप्ति नहीं होती जिसमें श्रीकृष्ण वृद्ध दिखायी दें, क्योंकि सम्पूर्ण त्रैकालिक (भूत, वर्तमान एव भविष्य) सृष्टि के आदि, पुराण पुरुष होने पर भी श्रीकृष्ण हमारी भाँति वृद्धावस्था को कभी प्राप्त नहीं होते। साथ ही, उनकी चिन्मय देह एवं बुद्धि में क्षय अथवा विकार नहीं होता। अतएव यह स्पष्ट है कि प्राकृत-जगत् में अवतरित होने पर भी वे अपनी परिवर्तनरहित दिव्य देह और बुद्धि से युक्त वही अजन्मा, नित्य, सच्चिदानन्दमय हैं। वस्तुतः उनका आविर्भाव-तिरोभाव सूर्य के उदित होने और हमारे आगे से गमन करके दृष्टि से विलुप्त हो जाने जैसा है। सूर्य के अगोचर होने पर हमें